समाजवाद पर नेहरू के विचार

नेहरू पर समाजवादी विचारधारा का प्रभाव उनके 1926-27 की रूस यात्रा से ही दृढ़ हो गया था। वे रूस द्वारा प्राप्त आर्थिक विकास से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन 1929, के अध्यक्षीय भाषण में समाजवादी दर्शन के विश्वव्यापी सामाजिक प्रभाव को व्यक्त किया। उन्होंने भारत की दरिद्रता तथा आर्थिक विषमता के निवारण के लिए समाजवादी पद्धति को अनुकरणीय माना। उन्होंने ग्लिम्प्सेस ऑफ वर्ल्ड थ्योरी में ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के अध्ययन में मार्क्स की शब्दावली का भी प्रयोग किया। यद्यपि वे मार्क्स की विचारधारा के सभी तथ्यों से प्रभावित नहीं थे। विशेषतया वर्ग संघर्ष के विचार को शिकार नहीं करते थे। फिर भी उनके मन में पूंजीपतियों द्वारा साधनहीन कृषकों एवं श्रमिकों के शोषण के प्रति गहरा छोड़ था। वे इस आर्थिक शोषण को समाजवादी प्रक्रिया से समाप्त करना चाहते थे। भारत में नई आर्थिक समाज की स्थापना करने के लिए परिवर्तन एवं विकास का मार्ग अपनाना चाहते थे परंतु यह परिवर्तन शक्ति के द्वारा लाने का विचार उनका नहीं था। वह शांतिपूर्ण उपायों से सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन चाहते थे वे भारत में समाजवादी व्यवस्था की

स्थापना के लिए लोकतंत्र को अनिवार्य शर्त मानते थे वे जनता को जागृत कर उन्हें समाजवाद के प्रति निश्चित लोकमत का संचार करना चाहते थे। ताकि परिवर्तन की प्रक्रिया क्रमिक तथा स्वाभावित रूप से पूर्ण हो सके।

समाजवाद को को गति प्रदान करने के लिए नेहरू ने भारत की अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र को अत्यधिक महत्व दिया। उत्पादन के प्रमुख स्रोत का सार्वजनिक क्षेत्र में होना स्वतः सार्वजनिक स्वामित्व में वृद्धि करते हुए देशव्यापी औद्योगिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। वे भारत की दरिद्रता का निवारण मिश्रित अर्थव्यवस्था में ढूंढ रहे है। वे योजनाबद्ध विकास के द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से इस कार्य में जुट गए। यद्यपि आज भी देश में समाजवादी समाज की स्थापना का उद्देश्य पूर्णतया संपादित नहीं हो पाया है। अपितु इसका यह अर्थ नहीं है कि नेहरू ने जिस समाजवादी व्यवस्था का सृजन करना चाहा वह स्थापित नहीं हो पायी।